प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

कला वह झूठ है, जो हमें सच्चाई का एहसास करने में सक्षम बनाती है...
- पाब्लो पिकासो

स्पेन के चित्रकार

भारत आमतौर पर पाकिस्तान के आंतरिक मामलों में दखल नहीं देता, लेकिन वहां 13 और 15 वर्ष की दो हिंदू बहनों के जबरिया धर्मांतरण तथा उनकी शादियां कराने की घटना से उसका चिंतित होना स्वाभाविक है।

पाकिस्तान में अल्पसंख्यक

पाकिस्तान के सिंध प्रांत में दो नाबालिग अल्पसंख्यक हिंदू बहनों को अगवा करने और फिर धर्मांतरण कर मुस्लिमों व्यक्तियों के साथ उनकी जबरिया शादी कराने की घटना बेहद स्तब्धकारी है, जिसने वहां अल्पसंख्यकों की बदतर स्थिति को एक बार फिर बेपर्दा कर दिया है। सिंध के हाई कोर्ट ने भले ही सरकार को इन लड़कियों की सुरक्षा को लेकर निर्देश दिए हैं, लेकिन मीडिया रिपोर्ट्स से पता चलता है कि अकेले सिंध में जबरिया शादियां कराने की औसतन हर महीने पच्चीस घटनाएं होती हैं, जिनमें से कुछ मामले ही पुलिस तक पहुंच पाते हैं। शर्मनाक यह है कि जब भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज ने इस घटना पर एतराज जताया और पाकिस्तान से रिपोर्ट मांगी, तो बजाय सही जानकारी देने के पाकिस्तान के सूचना प्रसारण मंत्री फवाद चौधरी उनसे ट्वीटर पर उलझ गए। भारत आमतौर पर पाकिस्तान के आंतरिक मामलों में दखल नहीं देता, लेकिन वहां अल्पसंख्यकों के साथ होने वाली ज्यादतियों और मानवाधिकार को लेकर उसका चिंतित होना स्वाभाविक है, और फिर यह तो 13 और 15 वर्ष की दो बहनों के जबरिया धर्मांतरण और उनकी शादियां कराने से जुड़ा मामला है। भारत में ऐसी घटनाओं में कड़ी सजा के प्रावधान हैं। आधिकारिक रिकॉर्ड के मुताबिक, पाकिस्तान में 75 लाख हिंदू हैं और उनमें से अधिकांश सिंध में बसे हुए हैं। इसके अलावा वहां ईसाई और सिख अल्पसंख्यक भी हैं और उन्हें भी उत्पीड़न और कठोर कानूनों का शिकार होना पड़ता है। प्रधानमंत्री बनने के बाद इमरान खान ने नया पाकिस्तान बनाने का वादा किया था, लेकिन यह घटना वहां अल्पसंख्यकों की स्थिति को बताने के लिए पर्याप्त है। वह और उनके मंत्री भले ही पाकिस्तान के झंडे में सफेद रंग को वहां अल्पसंख्यकों की उपस्थिति का प्रतीक बताएं, लेकिन यह बात जमीनी स्तर पर उनके प्रति व्यवहार में भी दिखनी चाहिए। हकीकत यह है कि पाकिस्तान हिंदू काउंसिल के प्रमुख और इमरान की पार्टी से नेशनल एसेंबली के सदस्य रमेश कुमार वंकवानी ने इस घटना पर क्षोभ व्यक्त किया है कि किस तरह से कट्टरपंथियों के दबाव में सिंध में धर्मांतरण पर रोक लगाने वाले कानून को वापस ले लिया गया। इमरान सरकार जब तक इन लड़कियों के साथ हुई ज्यादतियों के आरोपियों को सजा नहीं दिलाती उसके दावे पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

नगा गुटों और माओवादियों का गठजोड़

पूर्वोत्तर इलाके में चीन की खासी दिलचस्पी है। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी के साथ मिलकर चीन इस इलाके के विप्लवियों को सक्रिय रखे हुए है। इससे मुस्तैदी से निपटना जरूरी है।

रवींद्र दुबे, वरिष्ठ पत्रकार

पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर हुए आतंकी हमले और फिर उसके बाद बालाकोट में आतंकी शिविर पर भारतीय वायुसेना की कार्रवाई के कारण चुनाव में राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा भी चर्चा में है। वहीं, नगालैंड के उग्रवादी संगठनों और माओवादियों के बीच कथित गठजोड़ की खबरों से केंद्रीय गृह मंत्रालय की नींदें उड़ी हुई हैं। आगामी चुनाव में यह मुद्दा भले न बने, लेकिन पूर्वोत्तर क्षेत्र में माओवादियों की गतिविधियों का विस्तार आगामी समय में भारत की आंतरिक सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती बन सकता है। फिलहाल स्थिति यह है कि मंत्रालय के आदेशानुसार राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) पूर्वोत्तर खासकर नगालैंड के उग्रवादी संगठनों और माओवादियों के बीच किसी भी तरह के तालमेल का पता लगाने के लिए जमीन आसमान एक किए हुए है।

गत माह सात फरवरी को बिहार पुलिस ने पूर्णिया में अंडर बैरल ग्रेनेड लांचर (यूबीजीएल) और एके 47 रायफलों की एक बड़ी खेप बरामद की। गृह मंत्रालय के अधिकारियों के अनुसार अभी तक की गई इस जांच से पता चला कि ये हथियार म्यांमार सीमा के उस पार से नगालैंड के भूमिगत उग्रवादी समूहों की मदद से बजरिये तस्करी कर लाए गए थे और ये देश भर के माओवादियों के पास भेजे जाने वाले थे। गृह मंत्रालय के सूत्रों के अनुसार पूर्वोत्तर में सुरक्षित स्थान खोज रहे माओवादियों ने सुरक्षा बलों की कड़ी कार्रवाई के मद्देनजर पहले भी वहां के उग्रवादी समूहों से मदद मांगी थी।

पिछले महीने बिहार पुलिस ने मणिपुर से दो और उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया था। कहोनांगाम और क्लियर्सन कावो मणिपुर के उखरुल से और सूरजप्रसाद गोरखपुर से पकड़े गए थे। एनआईए ने इनसे हथियारों के मुख्य सौदागर के बारे में पूछताछ की थी। उखरूल भारत-म्यांमार सीमा पर पड़ता है। सूत्रों का कहना है कि पटना का मुकेश सिंह हथियारों के सौदागरों और माओवादियों के बीच की मुख्य कड़ी है। फिलहाल वह फरार है।

गौरतलब है कि प्रतिबंधित भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) देश में फिलहाल सक्रिय वामपंथी उग्रवादी समूहों में सर्वाधिक हिंसक और घातक है। इसका गठन पीपुल्स वार (पीडब्ल्यूजी) और माओवादी कम्युनिस्ट सेंटर (एमसीसी) के विलय से 21 सितंबर 2004 को हुआ था। माओवादी एक लंबे समय से पूर्वोत्तर में पैर जमाने की कोशिश कर रहे हैं। असम में उनकी मौजूदगी पर 2006 में गृह मंत्रालय का पहली बार ध्यान गया था। जबकि सूत्रों का कहना है कि इस इलाके में वे 1996 से हैं। तभी से माओवादी पूर्वोत्तर के मुख्य विद्रोही समूहों से रणनीतिक गठजोड़ करने के सैकड़ों प्रयास कर चुके हैं। पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए), पीपुल्स रिवोल्यूशनरी पार्टी ऑफ कान्गलाईपाक (प्रीपाक), ऑल आदिवासी नेशनल लिबरेशन आर्मी और युनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (उल्फा), नेशनल सोशलिस्ट काउंसिल ऑफ नगालैंड इत्यादि इन समूहों में शामिल हैं। 2004 में ही उन्होंने असम और त्रिपुरा में दो समितियां स्थापित कर लीं और इस प्रकिया में उन्होंने मणिपुर की पीएलए से हाथ मिला लिया है। राष्ट्रीय जांच एजेंसी के अनुसार, जून, 2006 में माओवादी और पीएलए के सदस्यों की अनेक बैठकें हुईं।

नतीजतन कोलकाता में पीएलए का एक आधार स्थापित हो गया। यह आधार हथियार, विस्फोटक और संचार के उपकरण जुटाने में इन संगठनों की गतिविधियों में सामंजस्य स्थापित करता है। उक्त तथ्य इस बात से रेखांकित होता है कि ठीक दो साल बाद यानी 2008 के अक्तूबर में भाकपा (माओवादी) और पीएलए ने एक संयुक्त प्रेस वक्तव्य जारी कर 'अपने दुश्मन भारत देश और उसके खिलाफ युद्ध' करने पर अपनी एकता का इजहार किया।

जैसा कि भारतीय खुफिया एजेंसियों का कहना है कि भारत के पूर्वोत्तर इलाके में चीन की खासी दिलचस्पी है। इन एजेंसियों का मानना है कि पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के साथ मिलकर चीन इस इलाके के विप्लवियों को सक्रिय रखे हुए है। 2014 के संसदीय चुनावों के दौरान भाजपा के तत्कालीन प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी ने चीन की विस्तारवादी मानसिकता की ओर संकेत करते हुए इस पर जोर दिया था कि अरुणाचल जैसे राज्य हमेशा भारत का अभिन्न अंग रहेंगे। दो महीने बाद चुनाव से ठीक पहले चीनी सरकारी प्रचार माध्यमों का फोकस भारत के पूर्वोत्तर राज्यों पर आ गया। कहा गया कि मणिपुर, मिजोरम, मेघालय और नगालैंड देश के सर्वाधिक उपेक्षित राज्य हैं। यह बात चीन की समाचार एजेंसी सिन्हुआ ने अपनी एक रिपोर्ट में कही। ये चीन का भारत को याद दिलाने का तरीका था कि पूर्वोत्तर भारत के कवच में एक दरार है।

बीते वर्षों में भारतीय और म्यांमारी मीडिया में सरकारी सूत्रों के हवाले से छपी कुछ खबरों ने पूर्वोत्तर में विद्रोह बहाली के चीनी प्रयासों के प्रति ध्यान आकर्षित किया है। इन खबरों में चीन के अल्प और दीर्घकालिक उद्देश्यों पर प्रकाश डाला गया है। इनमें सुरक्षा बलों पर हमले करने में सक्रिय गुटों को मदद मुहैया करवाने, पूर्वोत्तर विद्रोहियों के एक संयुक्त मोर्चे की स्थापना, और एक गतिशील राजधानी के साथ निर्वासित सरकार के गठन में सहायता करना सम्मिलित है। यह सरकार धर्मशाला में निर्वासित तिब्बती सरकार की तरह होगी। इन खबरों का दावा है कि युनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ वेस्टर्न साउथ ईस्ट एशिया का गठन चीनी मदद के बिना संभव नहीं हो सकता था। इस संगठन ने जिस तरह से सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ की है, उसमें भी चीनी हाथ होने की बू आती है।

बहरहाल, स्थिति जो भी हो, भारत सरकार के लिए इससे मुस्तैदी से निपटना अत्यावश्यक है। हैरत इस बात की है कि हमारे यहां स्थिति को इस हद तक बिगड़ने दिया जाता है कि बाद में खतरा बहुत बड़ा हो जाता है। माओवाद इसका जीता-जागता उदाहरण है। सत्तर के दशक में जो आंदोलन पश्चिम बंगाल में सफलतापूर्वक कुचल दिया गया था, अस्सी के दशक के अंत में आंध्र प्रदेश में फिर से उभरा और उसने मध्य भारत में अपनी जड़ें जमा लीं। नतीजा सबके सामने है।

अंतर्ध्वनि

>> लियो टॉल्स्टॉय

बचपन को याद कर एक नूतन ऊंचाई का अनुभव होता है

बचपन के सुखी दिन, जो कभी नहीं लौटेंगे! क्या कभी कोई उसकी स्मृतियां भुला सकता है? उसके बारे में सोचते ही मेरा मन आज भी उल्लसित हो उठता है, आत्मा में एक नूतन ऊंचाई का अनुभव होने लगता है।

याद आता है, किस तरह दिन भर की उछल-कूद के बाद हम चाय की मेज के इर्द-गिर्द बैठ जाते थे। काफी देर हो चुकी होती थी, दूध और मिठाई के बाद आंखें नींद में मुंदने लगती थीं, किंतु फिर भी हम अपनी कुर्सी पर बैठे बातें सुनते रहते थे। बातें सुनने का शौक दबाना असंभव था।

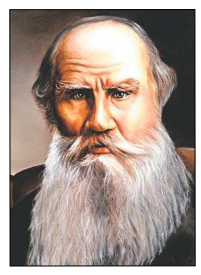

लेकिन नींद से मेरी पलकें भारी हो जातीं और दूसरे ही क्षण मैं सुध-बुध खोकर सोने लगता। आधी नींद में ही मुझे लगता कि कोई अपने कोमल हाथों से मुझे छू रहा है और मैं जान जाता कि यह मां का स्पर्श है।

मुझे उनका प्रिय, परिचित स्वर सुनाई दे जाता है-अब उठो, अपने बिस्तर पर जाकर आराम से सो जाओ। मैं अचानक जाग जाता हूं। मां मेरे पास बैठी है और मुझे छू रही हैं। मैं उनकी गंध को पहचानता हूं, उनके स्वर को भी। मैं उछलकर उठ बैठता हूं, और दोनों बांहें उनके गले में डाल देता हूं। फिर ऊपर अपने कमरे में जाकर मैं संतों के चित्रों के आगे प्रार्थना करता हूं, हे प्रभु, मां और पिताजी को हमेशा सुखी रखो!

प्रार्थना के बाद हल्की, उल्लास-भरी और उज्ज्वल-सी भावना घिरने लगती है। एक के बाद एक सपने आते हैं। वे सब धुंधले और छुईमुई-से जान पड़ते हैं- लेकिन उन सबमें निर्मल प्रेम और असीम सुख की आशा भरी होती है। क्या बचपन की वह ताजगी, बेफिक्री, प्यार की भूख और आस्था दुबारा कभी लौट सकेगी? प्रेम में उफनती वे प्रार्थनाएं कहां हैं? हमारी जिंदगी के सबसे सुंदर उपहार- भीगी, कोमल भावनाओं के उमड़ते आंसू क्या हमेशा के लिए खो गए?

-विश्वप्रसिद्ध उपन्यासकार

मंजिलें और भी हैं

>> केतकी जानी

लोगों को सिखा रही हूं गंजेपन के साथ जीना

जिंदगी में हम कई बार चाहते हैं कि कुछ ऐसा हो, जिससे हम लाखों में एक हो जाएं। ऐसा मेरे साथ हुआ। सब कुछ ठीक चल रहा था कि 2011 में 41 बरस की उम्र में मैंने महसूस किया, सिर के बाल तेजी से झड़ रहे हैं। देखते-देखते मैं गंजी हो गई! यह एलोपीसिया नाम की बीमारी के कारण था। इसमें कभी व्यक्ति का सिर और कभी पूरा शरीर ही केश-रहित हो जाता है। आप सोच सकते हैं कि कोई महिला गंजी हो जाए, तो कैसे समाज उसे बिना टीका-टिप्पणी के स्वीकार ले! हिंदू समाज में तो गंजेपन को अशुभ मानते हैं। विधवाओं को गंजी करने का चलन रहा है। गंजी होने से मेरा आत्मविश्वास ऐसा डगमगाया कि मैं रात में ही घर से निकलती थी। मैं डिप्रेशन में चली गई। तीन साल ऐसे गुजरे कि मैं रोज जीती और रोज मरती थी। परंतु पति, बच्चों और मेरे दो पालतू कुत्तों का बहुत सहारा मिला। उनका प्यार मेरी ताकत थी। उसी से मैं डिप्रेशन से उबर पाई। फिर मैंने अपने गंजेपन को स्वीकारते हुए यूं ही रहने का फैसला किया। मैं अपने इसी 'बाल्ड लुक' में बाहर जाती हूं। मैंने कभी विग नहीं लगाई। सिर पर खूबसूरत टैटू बनवाया। मेरी भौंहें भी चली गई थीं, तो टैटू से भौंहें भी बनवाईं। मैंने मिसेस इंडिया प्रतियोगिता में हिस्सा लिया, जहां मुझे 'मिसेज इंस्पीरेशन' अवार्ड मिला। मिसेज वर्ल्ड (2018, फिलीपींस) में मुझे 'मिसेज कॉन्फिडेंट' चुना गया। अब मैं एलोपीसिया के शिकार लोगों का हौसला बढ़ाने काम करती हूं। जगह-जगह जाकर इस बीमारी के प्रति लोगों को जागरूक बनाती हूं। एलोपीसिया पर लेक्चर देती हूं। फेसबुक पर मैंने 'सपोर्ट ऐंड एक्सेप्ट एलोपीसिया' पेज बनाया है। यहां मैं लोगों से बात करके उन्हें समझाती हूं कि आप चाहे गंजे हों, मगर जिंदगी से प्यार करना न छोड़ें। समाज के पैमानों पर नहीं, अपने हिसाब से जिंदगी जिएं।

मैं लोगों को समझाती हूं कि आप चाहे गंजे हों, मगर जिंदगी से प्यार करना न छोड़ें। अपने हिसाब से जिएं।

सबसे बड़ी समस्या यह है कि एलोपीसिया के बारे में आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं। कारण यह कि लोग इस बीमारी को छुपाते हैं। मन ही मन घुटते हैं और आत्महत्या तक कर लेते हैं। कुछ दिनों पहले मैं हिल गई थी, जब फेसबुक पर मुझसे संपर्क कर एक लड़की ने कहा कि गंजी हो जाने की वजह से उसका आत्महत्या करने का मन करता है। मैंने तुरंत उससे फोन पर संपर्क कर समझाया। आत्मविश्वास खोना वाकई दयनीय स्थिति में डाल देता है। गूगल पर सर्च करें, तो एलोपीसिया के कारण आत्महत्या की खबरें विदेश से ही नहीं, देश में भी मिलेंगी। मैंने नया मिशन शुरू किया है: लेट्स अनकवर एलोपीसिया (आइए, एलोपीसिया की हकीकत सामने लाएं)।

सदियों से बालों की खूबसूरती को साहित्य में इतना महिमामंडित किया गया कि सिर पर बाल न होना लोगों को पीड़ादायक लगता है। कोई खुद को बिना केश के स्वीकार नहीं कर पाता। लेकिन क्या गंजा होना पाप है? यह शारीरिक कमी भी नहीं है। मुश्किल यह भी है कि इस बीमारी का कारण अभी तक डॉक्टरों की समझ नहीं आया है। समझे होते तो कोई इलाज ढूंढते। सच यह है कि गंजेपन की दवा नहीं है, मगर सबसे ज्यादा धंधा वही डॉक्टर करते हैं, जो इसे खत्म करने या दूर करने का दावा करते हैं। मैंने दुनिया भर के डॉक्टरों को चैलेंज किया है कि मेरे बाल वापस उगा कर दिखाएं। ये डॉक्टर हमारे आत्मविश्वास से खेलते हैं। मेरे संघर्ष पर प्रफुल्ल शाह गुजराती में किताब (अग्निजा: अग्नि में जलकर खिला फूल) लिख रहे हैं। मैं चाहती हूं कि इसका हिंदी में भी अनुवाद हो।

थियेटर का अपना देश

विश्व रंगमंच दिवस के अवसर पर हर वर्ष यह इंगिति और अधिक मिलती ही है कि थियेटर न केवल सक्रिय है, वह फिल्म, टी.वी. और अन्य माध्यमों के बीच, अपनी जीवंत उपस्थिति बनाए हुए है।

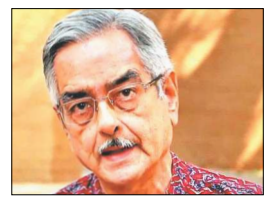

प्रयाग शुक्ल
वरिष्ठ साहित्यकार

विश्व रंगमंच दिवस प्रतिवर्ष 27 मार्च को मनाया जाता है। इसकी पहल 1961 में 'इंटरनेशनल थियेटर इंस्टीट्यूट' ने की थी। दुनिया भर में इस दिन रंगमंचीय संस्थाएं, विभिन्न रंगकर्मी और थियेटर प्रेमी, कई तरह के कार्यक्रम करते हैं। कोई नाटक प्रस्तुत करता है, कोई रंगमंच को लेकर कोई पोस्टर जारी करता है, कोई परिसंवाद आयोजित करता है, कुछ संस्थाएं किसी को व्याख्यान देने के लिए भी आमंत्रित करती हैं। इसी दिन स्वयं 'इंटरनेशनल थियेटर इंस्टीट्यूट' किसी विश्वप्रसिद्ध प्रतिष्ठित रंगकर्मी का एक संदेश जारी करता है। इसे दुनिया भर के ड्रामा स्कूल, थियेटर मंडलियां, और विश्वविद्यालयों-कॉलेजों के थियेटर विभाग अपनी तरह से प्रचारित-प्रसारित करते हैं। वर्ष 2019 का संदेश लिखा है क्यूबा के दिग्गज रंग-निर्देशक, अभिनेता 'कार्लोस सेल्ड्रान ने; वह कहते हैं : 'जब से मैंने यह समझा कि थियेटर का अपना ही एक 'देश' है, अपनी ही दुनिया, तब से मैं इसके आकर्षण में बंध गया।' वर्ष 1962 में पहला संदेश फ्रांसीसी नाटककार, कवि ज्यां काक्त्यू ने लिखा था। इस संदेश का उद्देश्य यह है कि प्रयोगशील कोई दिग्गज रंगकर्मी, थियेटर संबंधी अपने अनुभवों को साझा करे, और थियेटर संबंधी जो चिंताएं और सरोकार उसके मन में है, उनके प्रसंग से किसी रंगमंचीय विमर्श को अग्रसर करे।

इंटरनेशनल थियेटर इंस्टीट्यूट का मुख्यालय पेरिस में है, पर अन्य देशों में भी इसके केंद्र हैं, जो चाहते हैं कि इस दिन कार्यक्रमों की गहमागहमी बनी रहे, और आम लोगों तक भी इस विशेष दिन के प्रसंग से, एक प्रकार की थियेटर-चेतना और चिंता के लिए जगह बने।

इस वर्ष के संदेश में कार्लोस सेल्ड्रान जो, हवाना में रहते हैं, और दुनिया के विभिन्न देशों में अपनी नाट्य-प्रस्तुतियां कर चुके हैं, बड़ी खूबसूरती से यह भी याद दिलाते हैं कि थियेटर के क्षण मिट जाते हैं। दुहराए नहीं जा सकते। वह अपनी प्रस्तुतियों में, अपने संदेश में, संस्कृतियों के बीच एक पुल बनाने पर जोर देते हैं।

यह जानना दिलचस्प और प्रासंगिक है, कि भारत का प्रतिनिधित्व 'संदेश-प्रसंग' में हो चुका है। वर्ष 2002 में सुप्रसिद्ध नाटककार, अभिनेता गिरीश कार्नाड ने विश्व रंगमंच दिवस का संदेश लिखा था, इंटरनेशनल थियेटर इंस्टीट्यूट के आग्रह पर। गौर कर सकते हैं कि आज दुनिया भर में बहुतेरी रंग-मंडलियां सक्रिय हैं, और नाट्य-प्रस्तुतियों में प्रयोगों की संख्या लगातार बढ़ रही है। नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले 'भारत रंग महोत्सव' में विभिन्न देशों की नाट्य प्रस्तुतियों की जो झलक अब भारतीय दर्शकों को मिलने लगी है, वह यही बताती है कि नाटक की दुनिया में अब मंचसज्जा, आलोक परिकल्पना, डिजाइन, अभिनय—सभी में एक बड़ा परिवर्तन घटित हुआ है, और यथार्थवादी रंगमंच के साथ, अत्यंत कल्पना शील रंगमंच की सृष्टि हुई है। हमारे यहां इसका एक बड़ा उदाहरण सुप्रसिद्ध रंगकर्मी रतन थियम की नाट्य प्रस्तुतियां है, जो बिंब-रचना में, संगीत में, अभिनेताओं की गतियों में, हर बार कुछ ऐसा लेकर आती हैं, जो हमें चमत्कृत तो करता ही है, एक गहरी रंग-संवेदना से अनुप्राणित भी करता है। जाहिर है कि यह एकमात्र उदाहरण नहीं है, और केरल, बंगाल, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, पंजाब सहित कई प्रदेशों के वरिष्ठ और युवा रंगकर्मी साल-दर-साल भारतीय रंगमंच को समृद्ध कर रहे हैं।

हां, विश्व रंगमंच दिवस के अवसर पर हर वर्ष यह इंगिति और अधिक मिलती ही है कि थियेटर न केवल सक्रिय है, वह फिल्म, टी.वी. और अन्य माध्यमों के बीच, अपनी जीवंत उपस्थिति बनाए हुए है।

खुली खिड़की

शांति मिशन में जवान

संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन में सबसे ज्यादा इथियोपिया के जवान कार्यरत हैं, तो दूसरे स्थान पर बांग्लादेश, तीसरे पर रवांडा और चौथे स्थान पर भारत है। इस शांति मिशन में चीन का योगदान दसवें स्थान पर है।

झूठ के पांव नहीं होते

सत्संग

एक धनाढ्य व्यक्ति था। वह अपनी पुत्री मांगदिया का किसी सुंदर और श्रेष्ठ युवक से विवाह करना चाहता था। एक दिन उसने गौतम बुद्ध को देखा, तो उनके चेहरे के तेज से प्रभावित होकर अपनी पुत्री से शादी का प्रस्ताव उनके सामने रखा। गौतम ने विनम्रता से उत्तर दिया, मैं संसार त्याग चुका हूं, विवाह कैसे कर सकता हूं?

युवती को इससे आघात लगा। कुछ ही दिनों बाद कौशांबी के राजा उदयन से उसका विवाह हो गया, पर उसके बाद भी उसके मन में बुद्ध के प्रति द्वेष बना रहा। एक दिन मांगदिया को पता चला कि गौतम बुद्ध कौशांबी आने वाले हैं। उसने चुपके से पूरे शहर में प्रचार करा दिया कि गौतम बुद्ध कपटी हैं। दुष्प्रचार का असर पड़ा और नगर में पहुंचने पर बुद्ध को अपमान झेलना पड़ा। शिष्य आनंद ने बुद्ध से कहा, भंते,आपका अपमान सहा नहीं जा रहा। बुद्ध ने कहा, आनंद, झूठ के पांव नहीं होते। सत्य सामने आता ही है। धैर्य रखो। बुद्ध धैर्य के साथ नगर में रुक गए। राजा उदयन बुद्ध की महानता जानते थे। उन्हें दुख हुआ कि उनके राज्य में एक संत का अपमान किया गया है। वह रानी मांगदिया के साथ बुद्ध के दर्शन को गए और प्रजा की अज्ञानता के लिए माफी मांगी। बुद्ध ने कहा, मेरा किसी ने अपमान नहीं किया है। साधु को सम्मान की आकांक्षा नहीं करनी चाहिए। राजा-रानी और पूरी प्रजा सुखी रहे, यह मेरा आशीर्वाद है। यह सुन रानी को पश्चाताप हुआ और वह बुद्ध के चरणों में झुक गई।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

जैसी सोच वैसी वाणी

मनोविज्ञान के एक प्राध्यापक की कहानी, जिन्होंने छात्रों को जीवन का अनूठा पाठ पढ़ाया।

प्रोफेसर रवींद्र जाने-माने मनोवैज्ञानिक थे। उन्होंने एक साधारण-सी कहानी छात्रों को सुनाई। उस कहानी ने छात्रों की सोच पर खासा असर डाला। उन्होंने कहानी शुरू की, राज और सुमन बहुत दिनों बाद मिल रहे थे। दोनों अपने-अपने परिवारों के साथ थे। दोनो के बच्चे लगभग एक ही उम्र के थे। वे एक पार्क में घूमने के लिए गए। राज का बेटा दस साल का और सुमन का बेटा बारह साल का था। सारे लोग एक पेड़ के नीचे बैठकर बातें कर रहे थे। उधर दोनों बच्चे पेड़ पर उछल-कूद मचा रहे थे। राज और सुमन अपने कॉलेज की बातें याद कर रहे थे। उनकी बातें चल ही रही थीं कि राज की पत्नी ने देखा, दोनों बच्चे पेड़ की ऊंची शाखा पर जाकर बैठे हैं। एकदम से वजन ज्यादा होने के कारण शाखा टूटने लगी। राज तुरंत चिल्लाया, बंटी, देखो, गिर जाओगे। वहीं सुमन चिल्लाई, कसकर पकड़ना, हम आ रहे हैं। जब तक वे अपने बच्चों के पास पहुंचते, राज का बेटा बंटी शाखा से गिर गया और उसे काफी चोट आई। पर सुमन का बेटा शाखा को कसकर पकड़े रहा और बच गया। प्रोफेसर बोले, आप कहेंगे कि इसमें कौन-सी बड़ी बात है। बच्चे शैतानी करेंगे, तो पेड़ से गिरेंगे ही। पर क्या आपने गौर किया कि बंटी पेड़ से गिर गया, जबकि सुमन का बेटा पेड़ को कसकर पकड़े रहा। यह आम बात नहीं है। इसके पीछे एक कारण है। जब राज ने बंटी से बोला, देखो, गिर जाओगे, तो बंटी के दिमाग में जो तस्वीर बनी, उसमें वह गिर रहा था। उसका ध्यान गिरने की प्रक्रिया पर था। वहीं सुमन के बेटे के दिमाग में तस्वीर बनी कि वह शाखा पकड़े हुए है और उसकी मां उसे बचा रही हैं। इसलिए वह नहीं गिरा। यानी हम जो बोलते हैं, उसका काफी असर हमारी (या किसी सुनने वाले की) सोच और कर्म पर भी होता है।

वास्तव में हमारा नजरिया ही हमारा भविष्य निर्धारित करता है।